संरक्षण खेती

कुछ समझने वाली बातें

पाका (प्रोफेशनल अलायंस फॉर कौन्सर्वेशन एग्रीकल्चर)

संरक्षण खेती - किसान और पर्यावरण की भलाई के लिए

भूमिका

जहाँ एक तरफ भूमि की घटती उत्पादन क्षमता और खेती में बढ़ते पदार्थों की वजह से किसानों पर अत्यधिक बोझ पड रहा है वहीँ दूसरी ओर बढती आबादी की वजह से खाद्य - सुरक्षा भी चिंता का विषय बनता जा रहा है. इन बातों को ध्यान में रखते हुए संरक्षण खेती प्रणाली की ज़रूरत महसूस हो रही है. वर्तमान में फसलों की कीमतों पर किसानों का कोई नियंत्रण न होने से उनका नुकसान बढ़ता जा रहा है. दूसरी ओर, जलवायु परिवर्तन का असर खेती पर सीधा देखा जा रहा है. यह स्थिति किसानों के लिए हानिकारक है.

ऐसी स्थिति में, संरक्षण खेती, संसाधनों का संरक्षण और उत्पादन बढाने का प्रयत्न करते हुए, खेती की बिगढ़ती हालत में परिवर्तन ला सकती है. साथ ही कम मात्र में संसाधनों का उपयोग करने से किसानों की समस्या और जलवायु परिवर्तन के कारण उभरती कठिनाइयों को दूर किया जा सकता है. गरीबी, खाद्य सुरक्षा, और जलवायु परिवर्तन चिंता के विषय बन गए हैं. इस चिंता को ध्यान में रखते हुए, पारंपरिक खेती तरीकों में बदलाव लाना ज़रूरी है ताकि, खाद्य-सुरक्षा, आजीविका, और पर्यावरण की समस्याओं को दूर किया जा सके. इन परिस्थितियों में, संरक्षण खेती तरीकों द्वारा स्थायी खेती की जरूरतों को पूरा किया जा सकेगा.

संरक्षण खेती प्रणाली ३० वर्षों पूर्व शुरू की गयी है और अब तक कुल ५० देशों में १० करोड़ हैक्टैर भूमि पर इसे अपनाया जा चुका है. भारत में गंगा के मैदानों में २० लाख हैक्टैर भूमि पर इसे अपनाया गया है. भारत में इस प्रणाली के कुछ मुद्दों को अपनाया गया है, तीनों तरीकों को अपनाने से पहले किसानों की कठिनाइयों को दूर करना ज़रूरी है. कम जानकारी और अज्ञानता, प्रशिक्षण, उपकरणों की उपलब्धता और कृषि नीतियों का समर्थन कम होने की वजह से ये कठिनाइयाँ आ रही हैं. इस प्रणाली ने जहाँ भी सफलता पायी है वहां उसका श्रेय किसानों को ही जाता है, जिन्होंने अपनी सोच में बदलाव लाकर इसे अपनाया है.

खेती को खतरा

स्थायी खेती के लक्ष्यों को प्राप्त करने की राह में, जलवायु परिवर्तन एक चुनौती के रूप में उभर कर आ रहा है.जलवायु परिवर्तन पर खेती के तरीकों का असर होता है, जैसे, ग्रीन हाउस गैस (GHG)[1] उत्सर्जन इन तरीकों द्वारा बढ़ रहा है. वहीँ दूसरी ओर जलवायु परिवर्तन का असर भी खेती पर हो रहा है, जिसमें, जल की उपलब्धता में अनियमिता, प्रमुख असर है. सूखे का प्रमाण या फिर अधिक वर्षा से यह स्थिति उत्पन्न हुई है और किसी स्थान और किसी समय पर, इसी वजह से, असमान जल उपलब्धता नज़र आती है.

इसी प्रकार तापमान का बढ़ना, जलवायु परिवर्तन का दूसरा महत्त्वपूर्ण असर है जो की खेती और उत्पादन पर असर करता है. संशोधन करने वाले वैज्ञानिक, किसान, और निति निर्धारकों, के लिए यह एक चुनौती है की वे किस प्रकार रणनीतियों का विकास करें ताकि कम से कम ग्रीन हाउस गैस (GHG) उत्सर्जन हो. संरक्षण खेती प्रणाली में इतनी क्षमता है की वह

---

[1] अंग्रेजी शब्दों की जानकारी के लिए, पुस्तिका के आखिर में दिए गए शब्दकोष को देखें

जलवायु परिवर्तन के असर में कमी ला सकती है और उससे निपटने के तरीके भी प्रदान कर सकती है. संरक्षण खेती तरीके वातावरण में CO_2 को, कार्बनिक पदार्थ में बदलकर मिट्टी में संचित कर सकते हैं, जिसके पर्याप्त सबूत हैं. इसी प्रकार, यह प्रणाली ग्रीन हाउस गैस (GHG) उत्सर्जन में भी कमी ला सकती है जिसके लिए खेती में पदार्थों का सही उपयोग करना होगा और उत्पादन प्रणाली में बदलाव लाना होगा. यदि संरक्षण खेती को व्यापक रूप से अपनाया जाता है तो खेती के लिए जो चुनौतियाँ हैं उनका सफलता से सामना करना संभव है.

जल वायु परिवर्तन के अलावा, संसाधनों में आ रही कमी की वजह से उत्पादन पर बड़ा असर हो रहा है. पानी और मिट्टी की गुणवत्ता, जल की उपलब्धता, और जैव विविधता में कमी की वजह से उत्पादन कम हो रहा है. साथ ही, कई सामाजिक और आर्थिक समस्याएं भी खेती पर नकारात्मक असर डाल रही हैं जैसे, युवाओं का खेती छोड़कर शहर में अन्य व्यवसाय करना, कृषि उत्पादन में कमी, कीट प्रकोप का बढ़ाना, कृषि की लागत में बढ़त इत्यादि. छोटे किसानों पर इसका ज्यादा असर हो रहा है क्योंकि खेती के अलावा उनके पास आजीविका का कोई और विकल्प नहीं है. ६०% ज़मीन पर वर्षा आधारित खेती की जाती है जिसमें ज़्यादातर छोटे किसान हैं. किसान समुदाय में ८०% छोटे किसान हैं जो की कुल ४०-४५% ज़मीन पर खेती करते हैं.

संरक्षण खेती वह पद्धति है जो उन सबको लाभ देगी जो उसे पूरी तरह से उपयोग में लायेंगे परन्तु, यह महसूस हो रहा है की इसे मुख्य रूप से छोटे किसानों के लिए उपयोग में लाना चाहिए जिनको बहुत कम संसाधन उपलब्ध हैं और जिन्हें मजबूरी में खेती त्यागनी पड़ती है. बढती हुई जनसँख्या, ज़मीन का अधिक से अधिक उपयोग, और खाद्य ज़रूरतों को देखते हुए यह स्थिति भारत के लिए घातक हो सकती है.

संरक्षण खेती क्या है?

संरक्षण खेती वह प्रणाली है जिसमें मिट्टी से कम से कम छेड़छाड़ करते हुए और फसल अवशेषों को ज़मीन पर रखते हुए, फसल उगाई जाती है. साथ ही, स्थान के अनुसार सही फसल क्रम अपनाना और अदल बदल कर फसलें लगाना भी ज़रूरी है. संरक्षण खेती प्रणाली में कम संसाधनों का उपयोग करते हुए, फसल उत्पादन बढ़ाने के तरीके अपनाये जाते हैं. साथ ही, संसाधनों का संरक्षण करते हुए, किसानों की ज़रूरतों को ध्यान में रखकर जलवायु परिवर्तन के असर को भी कम करने के तरीके अपनाये जाते हैं. संरक्षण खेती तरीकों को अपना कर स्वच्छ वातावरण भी पाया जा सकता है क्योंकि इन तरीकों में ईंधन, कीटनाषक और प्रदूषकों का कम उपयोग होता है.

इस स्थिति को पाने के लिए पारंपरिक तरीकों में इस प्रकार बदलाव लाना होगा की पारम्परिक तरीकों को कोई खतरा भी न हो और न ही उत्पादन में कमी आये. अन्य पद्धतियों में, पहले किसानों को वो पद्धतियाँ समझानी होंगी और उनका ज्ञान देना होगा जिन्हें किसान स्वेछा से अपना सके.

संरक्षण खेती के मुख्य सिद्धांत

संरक्षण खेती पृणाली किसी स्थान की भौतिक, सामाजिक, और आर्थिक स्थिति के अनुसार अपनाई जा सकती है. इसमें कोई सख्त नियम नहीं हैं जिन्हें किसी विशेष पृकार से ही अपनाना ज़रूरी है. इसलिए यह ज़रूरी है की पारम्परिक तरीकों की तुलना में संरक्षण खेती तरीकों को समझा जाये. खेती की ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए, संरक्षण खेती तीन सिद्धांतों पर आधारित है, जो हैं:

शून्य जुताई द्वारा मक्के की खेती

मिट्टी से कम से कम छेड़छाड़

खेत में बीज बोने से पहले जुताई करने की पृथा बहुत पुरानी है. किसानों के अनुसार, जुताई करने से और मिट्टी खुली रखने से उसमें हवा का मिशृण अच्छे से होता है, पानी सोखने की क्षमता बढती है और खरपतवार की मातृ भी कम होती है. निरंतर जुताई के कारण कार्बनिक पदार्थों का ऑक्सीकरण (oxidation) बढ़ता है और मिट्टी में कुल कार्बनिक पदार्थ कम होने से उत्पादन भी कम होता है.

कार्बनिक पदार्थ मिट्टी की संरचना के लिए बहुत ज़रूरी हैं. बार-बार जुताई के कारण मिट्टी के भौतिक गुण कम होते हैं. ऐसी स्तिथि में पानी जयादा बहता है और कटाव भी बढ़ता है. जुताई की वजह से मिट्टी के भौतिक, रासायनिक, और जैविक गुणों में बदलाव आता है और धीरे-धीरे मिट्टी की उर्वरता और उत्पादकता में कमी आती है. संरक्षण खेती, इसीलिए,
शून्य जुताई या मिट्टी से कम से कम छेड़ -छाड़ का समर्थन करती है.

मिटटी पर फसल अवशेष रखना

सोयाबीन खेतो में फसल अवशेषों का प्रयोग

पारम्परिक खेती पृणाली में फसल अवशेषों को या तो पशु-खाद्य के रूप में उपयोग में लाया जाता है या फिर उन्हें खेतों में जला दिया जाता है, ताकि कीट पृकोप, रोग, और खरपतवार की मातृ कम हो और समय से जुताई की जा सके. इसके विपरीत, यदि अवशेषों को धरती पर रखा जाये तो घास-फूस (mulch) की सतह बन जाती है. यह सतह मिट्टी को धूप और वर्षा से बचा कर रखती है. जीव और जीवाणुओं के रहने और बढ़ने के लिए उपयुक्त (सही) वातावरण और पोषण पृदान करती है.

यह सतह मिट्टी में जैविक गतिविधियों को और कार्बनिक पदार्थ की मातृा को बढाती है, जिससे मिट्टी के भौतिक, रासायनिक, और जैविक गुण बढ़ते हैं. हालाँकि, इस तरीके को अपनाने के लिए फसल अवशेषों के अन्य उपयोगों को भी ध्यान में रखना पड़ेगा, खासकर यदि अन्य उपयोग किसानों को कोई आर्थिक लाभ दे रहे हों, तब इसे अपनाने में कुछ रुकावटें आ सकती हैं.

फसलों को अदल बदल कर लगाना (Diversified Crop Rotation)

जब फसल अवशेष जलाये नहीं जाते और मिट्टी की जुताई नहीं की जाती तब रोग, कीट और खरपतवार नियंत्रण के लिए सही फसल क्रम और अदल बदल कर फसल लगाना और एकीकृत कीट प्रबंधन के तरीकों को अपनाया जाता है. बदल कर फसलें लगाने से कीट संक्रमण (infection) की शृंखला टूट जाती है और मिट्टी में जीवाणुओं को बढ़ने का मौका मिलता है. फसल बदल कर लगाने से मिट्टी की अलग-अलग सतहों से पोषक तत्व पौधों द्वारा लिए जाते है जो की एक ही प्रकार की फसल लगाने से संभव नहीं होता. बदल कर फसलें लगाने से पोषक तत्वों की मात्र बढती है. मिट्टी की जैविक गतिविधियाँ बढ़ने के कारण मिटटी में नाइट्रोजन की मात्र बढती है जिससे ज्यादा मात्र में खाद (humus) बनता है. इन प्रक्रियाओं द्वारा जैव विविधता भी बढती है जिससे मिट्टी की सेहत पर अच्छा असर पड़ता है. सही वैज्ञानिक तरीके से, यदि संरक्षण खेती के इस सिद्धांत को अपनाया जाये, तो इससे मिट्टी की गुणवत्ता में और अधिक सुधार होने की संभावना है.

गन्ने के खेत में गेहूँ की अंतर-फसल

किस प्रकार इन सिद्धांतों का लाभ होगा?

संरक्षण खेती प्रणाली से, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष, दोनों रूपों में किसान को फायदे मिलते हैं. प्रत्यक्ष रूप में, फसल बोने में होने वाला खर्च, जैसे जुताई, मजदूरी, और ईंधन इत्यादि का खर्च कम होता है. संरक्षण खेती तरीकों को अपनाने से पर्यावरण और संसाधन दोनों का संरक्षण होता है. संरक्षण खेती तरीके - मिट्टी से कम से कम छेड़ छाड और फसल अवशेषों को मिट्टी पर रखना, इन दोनों तरीकों को अपनाने से, मिट्टी की गुणवत्ता और उत्पादन क्षमता बढती है.

फसल अवशेष मिटटी पे फैलाये हुए

फसल अवशेष मिट्टी पर रखने से उस पर एक सतह तयार होती है जो कि जीवाणुओं और छोटे पौधों के लिए खाद्य सामग्री प्रदान करती है. इस प्रकार मिट्टी में जैविक गतिविधियाँ और जैविक तत्व बढ़ते हैं. यह सतह कीड़ों से लेकर सूक्ष्म जीवाणु जैसे

कवक (fungi) और शैवाल (algae) के बढ़ने के लिए अनुकूल वातावरण भी प्रदान करती है. ये जीव धीरे-धीरे फसल अवशेषों को तोड़कर, स्थायी मृदा संरचना का निर्माण करते है.मिट्टी में रहने वाले बड़े जीव, जैसे केंचुवे मिट्टी की निचली सतहों तक जाकर उसमें बड़े छिद्र बनाते हैं जिनमें से आसानी से पानी निचली सतहों तक पहुँच जाता है. सूखे के दौरान यह पानी पौधों के लिए उपलब्ध रहता है.

फसल अवशेष की वजह से वर्षा का पानी सीधा मिट्टी पर नहीं गिरता, और कटाव कम होता है. ज्यादा मात्र में पानी मिट्टी द्वारा सोख लिया जाता है और बह जाने वाले पानी की मात्र भी कम होती है. अवशेषों की वजह से, पानी और हवा दोनों के बहाव की गति कम होती है और मिट्टी की उपरी सतह कम विस्थापित (displace) होती है. वर्षा आधारित खेती क्षेत्रों में इसका लाभ ज्यादा होता है क्योंकि भीतरी सतह की नमी पौधों के लिए जीवनकारी साबित होता है.

हवा की गति कम होने से, मिट्टी में से कम पानी वाष्पित (evaporate) होता है और अधिक देर तक मिट्टी में नमी बनी रहती है. अवशेषों की वजह से मिट्टी के तापमान में भी कमी आती है जिससे जैविक गतिविधियों को बढ़ने में मदद मिलती है.

संरक्षण खेती प्रणाली, मिट्टी के गुणों को बढाती है और स्थायी उत्पादकता लाती है. समय के साथ ये लाभ बढ़ते जाते हैं. सबसे पहले मिट्टी की उपरी सतह के गुण बढ़ते हैं और फिर निचली सतह,यानि जड़ क्षेत्र की मिट्टी की भी उर्वरता बढती है. मिट्टी से कम से कम छेड़छाड़, फसल अवशेषों को रखना और साथ ही सही फसल-क्रम अपनाने से कीट प्रकोप कम होता है और खाद एवं कीटनाशकों का उपयोग ज्यादा प्रभावी होता है. संरक्षण खेती को बढ़ावा देने के लिए नीचे दिए गए मुद्दों में विचार करने की ज़रूरत है:

मानसिकता में परिवर्तन

पारंपरिक खेती प्रणाली से संरक्षण खेती प्रणाली पूर्णतया अलग है इसलिए किसानों, वैज्ञानिकों और निति निर्धारकों की मानसिकता (सोच) में बदलाव लाने के लिए सतत प्रयत्न करने होंगे. स्थायी खेती के लक्ष्यों को पाने के लिए संरक्षण खेती तरीकों के बारे में जागरूकता बढानी होगी और उससे मिलने वाले लाभ जान लेना महत्त्वपूर्ण होगा तभी संरक्षण खेती प्रणाली सफलता से अपनाई जा सकेगी.

अनुकूलनशील (adaptive) शोध और प्रदर्शन के प्रयास

संरक्षण खेती के सिद्धांत अनुसन्धान करने के बाद ही दिए गए हैं और उन्हें अच्छे से समझा गया है, परन्तु, यह ज़रूरी है की विभिन्न प्रकार की फसलों और खेती के स्थान के अनुसार इन तरीकों में बदलाव लाकर इन्हें अपनाया जाये. इन तरीकों को अपनाने के लिए सही वैज्ञानिक शोध ज़रूरी हैं. छोटे किसानों की ज़रूरतों के अनुसार मशीनों का उपयोग और नीतियों में सुधार, जो इन उपकरणों की उपलब्धता बढ़ाये, ऐसे कदम उठाना ज़रूरी है. संरक्षण खेती तरीके किसानों के अनुभवों पर आधारित रहेंगे न की इनमें पारंपरिक खेती की तरह कोई सख्त नियम रहेंगे. हालाँकि, सारे तरीके वैज्ञानिक सिद्धांतों पर ही आधारित होंगे जो की स्थान के अनुसार बदले भी जा सकेंगे.

स्थान के अनुरूप प्रयत्नों में बदलाव

किसी स्थान की मिट्टी और उस जगह की फसलों के अनुसार संरक्षण खेती तरीकों को अपनाना ज़रूरी है. साथ ही, कितने फसल अवशेषों को किसान खेत में रखने के लिए तैयार होंगे यह फसल अवशेषों के अन्य उपयोगों पर निर्भर करता है. इस वजह से, यह कहा जा सकता है की, संरक्षण खेती तरीकों में जगह के अनुसार बदलाव आयेंगे और फिर उन्हें अपनाना होगा.

निति और संस्थाओं की मदद

यदि संरक्षण खेती तरीकों को व्यापक रूप से अपनाना है तो नीतियों में बदलाव लाना होगा और स्थानीय और राष्ट्रिय स्तर पर संस्थाओं से मदद लेनी पड़ेगी. उदाहरण के तौर पर खेतों में फसल अवशेषों को रखा जाये इसलिए किसानों को प्रोत्साहन देने की ज़रुरत है क्योंकि, संरक्षण खेती प्रणाली पारम्परिक तरीकों से अलग है. क्योंकि यह,पर्यावरण के हित में है, इसलिए इसे पर्यावरण सुरक्षा के कार्यक्रमों का एक हिस्सा बनाना चाहिए.

किसान समूहों और वैज्ञानिकों के बीच अनुभवों का आदान-प्रदान

खेती के तरीके में बदलाव लाने के लिए किसानों के अनुभवों को जानना और उन्हें दूसरे किसानों से बांटना ज़रूरी है. किसी विशेष स्थान पर आये अनुभव दूसरे स्थान के किसानों तक पहुंचना भी आवश्यक है, तभी संरक्षण खेती का व्यापक रूप में फैलाव होगा. संरक्षण खेती के बारे में ज्ञान और जानकारी विभिन्न संचार माध्यमों के द्वारा सारे किसानों तक पहुँचाना भी मददगार साबित होगा. किसानों और वैज्ञानिकों के बीच जब अनुभव बाटें जायेंगे तभी संरक्षण खेती प्रणाली सफलता से अपनाई जा सकेगी.

मशीनों की उपलब्धता और किसानों तक मशीनों का पहुंचना

छोटे किसानों की ज़रूरतों के हिसाब से मशीनों का उपयोग और उपलब्धता बढानी होगी. किराये से मशीन उपलब्ध करवाना, छोटे किसानों की मदद करने का सही तरीका होगा. ब्राज़ील, पारागुए और अफ्रीका में आये अनुभवों से हमें सही मार्गदर्शन मिल सकता है.

संरक्षण खेती के लाभ

संरक्षण खेती तरीके,एक स्थायी उत्पादन प्रणाली को पाने के लिए अपना योगदान देती है. उत्पादन की स्थायी स्थिति को पाने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करते हुए मृदा की जैविक गतिविधियों को बढाया जाता है, साथ ही यह ध्यान में रखा जाता है की इस प्रक्रिया के दौरान उत्पादन में कोई कमी न आये. संरक्षण खेती के लाभ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में नज़र आते हैं.

प्रत्यक्ष (सीधे/ स्पष्ट) लाभ ये हैं की हर बार बीज बोने से पहले, खेत की जुताई में होने वाला ईंधन और मजदूरी का खर्च कम होता है. अप्रत्यक्ष रूप में,कुछ समय तक संरक्षण खेती प्रणाली अपनाने के कारण, संसाधनों का संरक्षण होता है और पर्यावरण की स्थिति में भी हितकारी बदलाव आता है.

संरक्षण खेती तरीके अपनाने से, बीज बोने से पहले खेत की तयारी और बुआई का खर्च कम होता है. जुताई न करने की वजह से, पारंपरिक खेती की तुलना में ३०-४०% तक का समय, ईंधन, मजदूरी का खर्च कम होता है. हमारे देश में यह अनुभव है की जिन खेतों में जुताई नहीं की गयी है वहां, ट्रक्टर का किराया और ईंधन का खर्च कम होने से १,२००/- रु. प्रति एकर की बचत हुई है.

- *जहाँ संरक्षण खेती प्रणाली अपनाई जाती है वहां मिट्टी की, पानी को सोख कर रखने की शक्ति बढती है और सतह पर से बह कर जाने वाले पानी की मात्रा और मिट्टी का कटाव में कमी आती है. मिट्टी न बहने से, जलाशयों (नदी, तालाब, इ.) का पानी प्रदूषित नहीं होता और भू-जल(मिट्टी के भीतर का पानी) की मात्रा बढती है.*
- *जिन खेतों में जुताई नहीं की हो और फसल अवशेष रखे गए हों, उन खेतों की मिट्टी में CO_2 संचित होता है इसीलिए, संरक्षण खेती तरीके पर्यावरण शुद्ध रखने और जलवायु परिवर्तन के असर को कम करने में मददगार साबित होते हैं. इसी वजह से, कार्बन क्रेडिट (**carbon credit**) का लाभ भी उन किसानों को मिल सकेगा जो संरक्षण खेती प्रणाली अपना रहे हैं.*
- *संरक्षण खेती, विभिन्न फसल प्रणालियों को अपनाने का अच्छा अवसर प्रदान करती है. फसल क्रम जब स्थान के अनुसार अपनाया जाता है तब प्राकृतिक प्रक्रिया बढती है. इससे, कीट और रोग कम होते हैं और उत्पादन कम होने का डर भी नहीं रहता.*
- *संरक्षण खेती में जुताई न करना और फसल अवशेषों को धरती पर रखना, इन तरीकों के कारण अवशेषों को जलाने की प्रथा ख़त्म करने का मौका मिलता है. जलने की प्रक्रिया में बहुत सारी ग्रीन हाउस गैस (**GHG**) जैसे CO_2, **CO**, NO_2, SO_2, और धूएँ के कण निकलते हैं, जो की पर्यावरण के लिए हानिकारक है.*

बढ़ते कदम

*इस विषय में यदि कोई जानकारी की ज़रुरत आप महसूस करते हों तो पाका से संपर्क कीजिये, पाका को प्रसन्नता होगी. हमारे कार्य के अंतर्गत, हम हर दो महीनों में पत्रिका प्रकाशित करते हैं, इसे पढने के लिए हमारी वेबसाइट **www.conserveagri.org/content.htm** देखिये या फिर, **info@conserveagri.org** को ई-मेल भेजकर अपना ई-मेल पता हमारी लिस्ट में जोड़ लीजिये. पाका का कार्य क्षेत्र खेतों तक है और उस माध्यम से भी पाका से जुडा जा सकता है. यदि आप किसानों के हित के लिए कार्य कर रहे हैं और संरक्षण खेती प्रणाली से होने वाला लाभ समझकर, उसे अपनाना चाहते हों तो हमसे ज़रूर संपर्क करें. यदि आप हमसे जुड़ना चाहते हैं और किसी अन्य तरीके से भी यदि योगदान देना चाहते हैं तो हमें प्रसन्नता होगी.*

शिक्षा शृंखला के बारे में

पाका संस्थान, संरक्षण खेती के क्षेत्र में योगदान देने का प्रयास कर रही है. इस प्रयास का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है, कृषि संरक्षण में किसानों की क्षमता को बढ़ाना. इसी बात को ध्यान में रखते हुए एक शिक्षण शृंखला की रचना की गयी है जिसमे कृषि के लिए महत्त्वपूर्ण, कुछ चुने हुए विषयों को वैचारिक और प्रायोगिक दृष्टि से शामिल किया गया है. सरल भाषा और चित्रों का उपयोग करते हुए लिखी जाने के कारण ज़्यादा से ज़्यादा किसान इसका उपयोग कर सकेंगे. पाका द्वारा, इस शिक्षा शृंखला का अन्य स्थानीय भाषाओँ में भी प्रकाशन किये जाने की उम्मीद है. भारत की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए इस शृंखला में जानकारी दी जा रही है और पाका का यह प्रयास रहेगा की कृषि की दृष्टी से सभी महत्त्वपूर्ण विषयों को इसमें शामिल किया जाये.

पाका के बारे में

कृषि के बढ़ते महत्त्व और इसी विषय में लोगों की घटती दिलचस्पी को देखते हुए, पाका जैसी संस्थान का निर्माण हुआ है. खाद्य सुरक्षा, कृषि के लिए उपयोगी भूमि का अन्य कार्यों के लिए उपयोग, जलवायु परिवर्तन का असर, और किसानों की घटती आमदनी को देखते हुए, ये विषय किसानों और निति निर्धारकों के लिए गंभीर चिंता का कारण बन रहे हैं. पाका संस्थान, कृषि के तरीकों में बदलाव लाने वाली एक संस्था के रूप में, खाद्य सुरक्षा बढाकर, मनुष्य और पर्यावरण दोनों का भला करने के लिए आगे आ रही है. यह संस्था, वैज्ञानिक और सामाजिक सिद्धांतों पर आधारित तरीकों को अपनाते हुए, अन्य संस्थाओं के साथ जुड़कर कृषि की ज़रूरतों को पूरा करेगी. कासा (CASA) और सोसाइटीस्टैड (SocietySTADD) के सहयोग और समर्थन ने पाका को एक ऐसे मंच के रूप में स्थापित किया है, जिसके द्वारा कृषि से जुड़े सभी हितधारकों को, कृषि क्षेत्र की बिगडती स्थिति को ठीक करने के लिए प्रेरित किया जायेगा. ऐसी आशा है की पाका एक ऐसी संस्था रहेगी जो कृषि की उन्नति के लिए कार्य करने वाले व्यक्तियों और संस्थानों को प्रेरणा देती रहेगी.

पाका (प्रोफेशनल अलायंस फॉर कौन्सर्वेशन एग्रीकल्चर)
1st Floor, NASC परिसर, डीपीएस मार्ग, पूसा, नई दिल्ली - 110 012
दूरभाष: 011-45132119/09810112773
वेबसाइट: www.conserveagri.org
ईमेल: info@conserveagri.org

MAY 2010